श्री वेंकटेश्वर जी

का

सुप्रभात स्तोत्र

(हिन्दी - टीका - तात्पर्य सहित)

- टीकाकार -

डॉ. एम्. संगमेशम्, एम. ए., पी.एच.डी.,

तिरुपति



- प्रकाशक -

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

2004

SRI VENKATESA SUPRABHATAM

(In Hindi)

Translated by
Dr. M. Sangamesam

T.T.D. Religious Publications Series : No. 531

Reprint : 1998
Second Edition: 1999
Re-Print : 2004.

Copies : 5,000

Published by
Ajeya Kallam, IAS.,
Executive Officer,
T.T. Devasthanams,
Tirupati - 517 507.

Printed at
Adisri Screens
Tirupati - 517 501.

श्री वेंकटेशाय नमः

आमुख

श्री वेंकटाद्रिनिलयः कमला कामुकः पुमान् ।
अभंगुर विभूतिर्नस्तरंगयतु मंगलम् ।।

पुण्यभूमि भारत में पवित्र व पुण्यप्रद नदी-नद-वन पर्वत-सर और सागर कई हैं । ऐसे प्रदेशों में प्राचीन व इतिहास प्रसिद्ध देवायतन भी असंख्य मिलते हैं । उन सभी में कृष्णा- कावेरी नदियों के बीच के भूमि-भाग में, श्री वेंकटाचल पहाड़ पर श्री वेंकटेश्वर का जो मंदिर है, वह ऋग्वेद काल से प्रसिद्ध है ।

"वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन ।
वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति ।।" —

इस पुराणोक्ति को सार्थक व चरितार्थ करते हुए, यह मंदिर प्राचीन काल से लेकर आज तक नित्य सत्य एवं नित्य नूतन विभवाभिराम होते जो पनप रहा है, वह तो सब को प्रत्यक्ष विदित है ।

प्राचीन काल से समय समय पर स्थानिक राजा-रईस लोग, अतीव भक्ति-श्रद्धाओं से इस मंदिर के दिव्य भंडार की श्रीवृद्धि में साथ देते, कितने ही बहुमूल्य आभूषणों तथा अन्य संभारों को जुडाते, स्वामी के सेवा-कैंकर्य में कभी किसी कमी न आने देते, अनितर सुलभ आदर दिखाते, आये हैं ।

हमारे देश में छपाई की सुविधा प्राप्त होते ही मंदिर की ओर से संस्कृतभाषा में 'श्री वेंकटाचल माहात्म्य' नामक ग्रंथ तेलुगु और नागरी लिपियों में प्रकाशित किया गया। देवस्थान की न्यास-मंडली के निर्वाचन के बाद मंदिर का अपना एक छापाखाना भी खुला । फिर, सैकड़ों

तरह के त्रिवर्ण व साधारण चित्र लाखों की तादाद में छपने लगे।

इसी तुखला में इस छोटी पुस्तक का प्रनर्मप्रण कियाणा रहा है। यह भी भगवतु प्रीति आस भणपनों का आदर प्राप्त कर लेगी, यही आशा कै।

कार्यनिर्वहणाधिकारी

पुस्तक का परिचय

वेंकटाद्रि समं स्थानं ब्रह्मांडे नास्ति किंचन ।
वेंकटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति ॥

यह तो शास्त्रसिद्ध है कि जगच्छरीरी भगवान परमपुरुष जगत की सृष्टि, स्थिति और विलय का कारण होने से, सदा जागरूक रहता है। लोक की रक्षा केलिए त्रेतायुग में अवतार लिये हुए श्रीराम को अपने साथ ले जाते समय, रास्ते में एक जगह रात में सोये हुए प्रभु को मुनि विश्वामित्र ने "कौसल्या सुप्रजा राम" इत्यादि वचनों से जगाया था। अब लोक में अर्चारूप में अवतरित तिरुमल श्री श्रीनिवास को रोज प्रातः समय जगाने के लिए उसी श्लोक से आरंभ करके यह "सुप्रभात स्तोत्र" मंदिर में स्वामी के सन्निधान में पढा जाता है। विभवावतारों में जिस तरह होता था, अर्चावतार में भी उसी तरह भगवान के रात में आराम लेते सोने की बात मानी जाती है, वह शास्त्रसम्मत हैं।

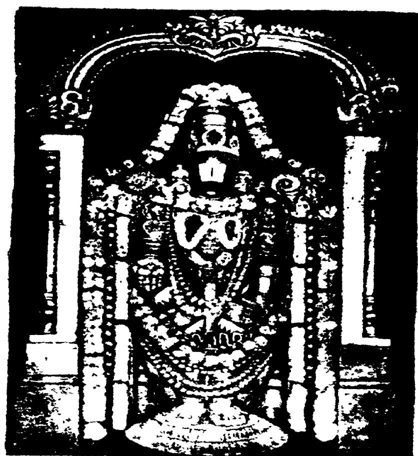
मामूली तौर पर हर व्यक्ति अरुणोदय के समय निद्रा से उठकर हरि-स्मरण करे तो उसके सभी पाप दूर हो जाते हैं और उसको सब तरह के शुभ प्राप्त होते हैं—ऐसा मनु जैसे धर्मशास्त्रकर्ता ऋषि-मुनियों का मत है। महाभागवत जैसे पुराणों का भी यही मत है। इस तरह का स्मरण देवायतनों में स्वामी-की-मूर्ति के सामने उसके दिव्यमंगल स्वरूप तथा शोभामय परिसरों को साक्षात्कृत करते किया जाय तो निस्संदेह उस स्मरण से करोडों गुना अधिक फल होगा।

आधुनिक काल में, जब तरह तरह के संचार साधनों की सहायता मिल रही है, यह सुप्रभात स्तोत्र देश के कोने कोने में और विदेशों में भी हर दिन हर जगह प्रसारित होकर भगवन्महिमा की याद दिला रहा है।

पहले सरल भावार्थ सहित प्रकाशित यह सुप्रभात स्तोत्र अब हर श्लोक के भाव-चित्रों सहित मुद्रित होकर चक्षुःप्रीति भी दे -इस उद्देश्य से इसका एक सचित्र संस्करण प्रत्येक श्लोक के शब्दार्थ तथा भावार्थ सहित निकाला जा रहा है

भगवान श्री वेंकटेश्वर से प्रार्थना है कि यह सेवा-कैंकर्य भी सार्थक व चरितार्थ हो।

डॉ. एम्. संगमेशम्,



॥ श्रीवेङ्कटेशसुप्रभातम् ॥

सुप्रभात स्तोत्र

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वासंध्या प्रवर्तते ।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥

कौसल्या सुप्रजा राम = कौसल्या देवी की सत्संतन स्वरूप, हे श्रीराम; पूर्वोमंध्या = पूरब में संध्या; प्रवर्तते = निकल रही है; नर शार्दूल=हे पुरुषश्रेष्ठ; उत्तिष्ठ = उठो; दैवं = देवता संबधी; आह्निकं = दिन में किये जाने वाले पूजा अर्चा आदि कार्य; कर्तव्यम् = करने हैं।

कौसल्या देवी की सत्संतान स्वरूप हे श्रीराम, पूरब में अरुणोदय हो रहा है, उठो। दैवी और दैनिक पूजा आदि कार्य करने हैं; हे पुरुषश्रेष्ठ, नींद से जाग उठो।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज ।
उत्तिष्ठ कमलाकांत त्रैलोक्यं मंगलं कुरु ॥ २ ॥

गोविंद = हे गोविंद; उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ = उठो उठो (नींद से जाग उठो); गरुड ध्वज = गरुड के ध्वजावाले; उत्तिष्ठ = उठो; कमलाकांत = हे लक्ष्मीनाथ; उत्तिष्ठ = उठो; त्रैलोक्यं = तीनों लोकों का; मंगलं = मंगल; कुरु = करो।

हे गोविंद! निद्रा से जाग उठो, हे गरुडध्वज जल्दी उठो, हे लक्ष्मी-नाथ, जल्दी उठकर तीनों लोकों का शुभ संपादन करो।

मातः समस्त जगतां मधुकैटभारेः
वक्षो विहारिणि मनोहर दिव्यमूर्ते ।
श्री स्वामिनि श्रितजन प्रियदानशीले
श्रीवेंकटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

समस्त जगतां=सारे जगत की ; मातः = माता ; मधुकैटभारेः=मधु और कैंटभ नाम के राक्षसों के शत्रु विष्णु की ; वक्षो विहारिणि =छाती पर विहार करनेवाली ; मनोहर दिव्यमूर्ते = सुंदर दिव्य आकृति वाली ; श्रीस्वामिनि = माननीया यजमानिनी ; श्रितजन प्रियदानशीले = आश्रितों की कामनाओं को पूरा करने की स्वभाववाली ; श्रीवेंकटेशदयिते = श्रीवेंकटेश्वर की पत्नी ; तव = तुम्हारा ; सुप्रभातम् = शुभोदय हो ।

सभी लोकों की मां, सदा विष्णु के वक्ष में रहनेवाली, दिव्य सुंदर विग्रहवाली, आश्रितों की कामनाओं को पूरा करनेवाली, हे श्रीवेंकटेश्वर की पत्नी, श्रीलक्ष्मी तुम्हारा शुभोदय हो ।

तव सुप्रभात मरविंदलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचंद्रमंडले ।
विधिशंकरेंद्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥ ४ ॥

अरविंदलोचने=पद्मों जैसी आंखोवाली ; प्रसन्नमुखचंद्रमंडले=चंद्रबिंब के समान प्रसन्न मुख वाली; विधिशंकरेंद्र वनिताभिरर्चिते = ब्रह्मा, शंकर और इंद्र की पत्नियों, अर्थात् वाणी, गिरिजा, और शची से पूजित होनेवाली ; दयानिधे = दया की निधि ; वृषशैलनाथदयिते = वृषाचलनाथ श्री वेंकटेश्वर की पत्नी, हे लक्ष्मी ; तव=तुम्हारा ; सुप्रभातम् =शुभोदय हो ।

हे लक्ष्मी! तुम कमल समान नेत्रवाली हो, चंद्रबिंब के समान प्रसन्नमुखवाली हो, वाणी, गिरिजा और शची से पूजित होनेवाली हो, दयानिधि हो । हे वृषभाचलेश्वर वेंकटेश की पत्नी, तुम्हारा शुभोदय हो ।

अत्र्यादि सप्तऋषयः समुपास्य संध्यां
आकाश सिंधुकमलानि मनोहराणि ।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

अत्र्यादि सप्त ऋषयः = अत्रि आदि सातों ऋषि; संध्यां = प्रातः संध्या की; समुपास्य=उपासना करके; मनोहराणि = मनोज्ञ; आकाशसिंधुकमलानि = आकाश गंगा के पद्मों को; आदाय = संग्रह करके; पादयुगम् = तुम्हारे पादयुगल की; अर्चयितुं = अर्चा करने; प्रपन्नाः = आये हैं; शेषाद्रिशेखर विभो = शेषाद्रि के शिखर पर विराजमान, हे प्रभो, विष्णु; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

अत्रि आदि सप्तर्षि सबेरे संध्या की उपासना करके आकाश गंगा के मनोज्ञ पद्मों को इकट्ठाकर तुम्हारे चरणों की पूजा करने केलिए आये हैं। हे शेषाचलाधीश भगवान्, तुम्हारा शुभोदय हो।

पंचाननाब्जभव षण्मुख वासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवंति।
भाषापतिः पठति वासर शुद्धिमारात
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

पंचानन, अब्जभव, षण्मुख, वासवाद्याः = शंकर, ब्रह्मा, कुमार, इंद्र आदि; विबुधाः = देवगण; त्रैविक्रमादि चरितं = तुम्हारे त्रिविक्रम अवतार आदि चरितों का; स्तुवंति = स्तोत्र कर रहे हैं; भाषापतिः = देवगुरु बृहस्पति; आरात् = समीप में; वासरशुद्धि=पंचांग देखकर दिनशुद्धि को; पठति = पढ रहा है; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषाचलवासी प्रभो; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभादय हो।

ब्रह्मा, शिव, स्कंद, इंद्र प्रभृति देवतागण तुम्हारे त्रिविक्रम अवतार आदि दिव्य चरितों का स्तोत्र कर रहे हैं। बृहस्पति पंचांग पढ कर दिनशुद्धि सुना रहे है। हे शेषाचलाधीश, तुम्हारा शुभोदय हो।

ईषत्प्रफुल्ल सरसीरुह नारिकेल
पूगद्रुमादि सुमनोहर पालिकानाम्।
आवाति मंदमनिलः सह दिव्यगंधैः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

ईषत् प्रफुल्ल सरसीरुह नारिकेल पूग द्रुमादि सुमनोहर पालिकानाम् = थोडा थोडा विकसित कमल, नारियल, पूग आदि के मनोज्ञ पुष्पों की; दिव्यगंधैः = सुगंध से; अनिल = हवा; मंदं = धीरे धीरे; आवाति = चल रही है; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषाचलाधीश; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

थोड़े थोड़े विकसित पद्मों, नारियल और पूग जैसे पेड़ों के फूलों की सुगंध से भरी हुई हवा धीरे धीरे चल रही है। हे श्री शेषाद्रि विभो, तुम्हारा शुभोदय हो।

उन्मील्यनेत्रयुगमुत्तमपंजरस्थाः
पात्रावशिष्ट कदलीफल पायसानि।
भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठंति
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

उत्तम पंजरस्थाः = बढ़िया पिंजडों में रहनेवाले; क्रीडाशुक = पालतू सुग्गे; नेत्रयुगं = दोनों आंखें; उन्मील्य = खोलकर (नींद से जाग कर); पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि = पात्रों में बचे हुए केले और खीर; भुक्त्वा = खाकर; अथ = अब; सलीलं = सविलास; पठंति = बोल रहे हैं; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषशैलाधीश; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो।

हे वेंकटाचलाधीश, पिंजडों में बद्ध पालतू सुग्गे जागकर पात्रों में बचे हुए केले और खीर खाकर अब सविलास बोल रहे हैं। हे स्वामिन्, तुम्हारा शुभोदय हो।

तंत्रीप्रहर्षमधुरस्वनया विपंच्या
गायंत्यनंतचरितं तव नारदोऽपि।
भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

नारदः अपि = नारद भी ; तंत्री प्रहर्ष मधुरस्वनया = तंतुओं के वैशिष्ट्य से सुमधर शब्द करनेवाली ; विपंच्या = वीणा से ; भाषा समग्र = भाषा से पूरी समृद्ध ; असकृत करचार रम्यं = बार बार किये जाने वाले करचालनों से मनोहर लगनेवाले ; तव = तुम्हारे ; अनंत चरितं = कभी न अंत होनेवाले चरित को ; गायंति = गा रहा है ; शेषाद्रिशेखर विभो = हे शेष शैलाधीश ; तव = तुम्हारा ; सुप्रभातम् = शुभोदय हो ।

तंत्रियों से सुमधुर स्वर देनेवाली वीणा बजाते हुए सुंदर और अर्थयुक्त भाषा में हस्तचालनादि अभिनय से नारद महामुनि तुम्हारे अशेष दिव्य चरितों का गान कर रहा है । हे शेषाद्रि प्रभो, तुम्हारा शुभोदय हो ।

भृंगावली च मकरंदरसानुविद्ध
झंकार गीत निनदैः सह सेवनाय ।
निर्यात्युपांत सरसीकमलोदरेभ्यः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

भृंगावली च = भौंरों का समूह भी ; मकरंद रसानुविद्ध झंकार गीत निनदै सहः = पुष्परस के पान से मत्त हो कर झंकार गीतों को आलापते ; सेवनाय = तुम्हारी सेवा के लिए ; उपांत सरसी कमलो दरेभ्यः=समीप के तडागों के कमलों में से ; निर्याति=बाहर आ रहा है ; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषशैलाधीश ; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो ।

मकरंद - पान से मतवाले बन कर झंकार करते गाते हुए, समीप के सरोवरों के कमलों में से निकल कर, भौंरों का समूह भी तुम्हारी सेवा करने आ रहा है । हे शेषाचलाधीश, तुम्हारा शुभोदय हो ।

योषागणेन वरदध्नि विमथ्यमाने
घोषालयेषु दधिमंथनतीव्रघोषाः ।

रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुंभाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

घोषालयेषु = ग्वालों के घरों में; योषागणेन = स्त्री जनों से; वर दध्नि = बढ़िया दही; विमथ्यमाने = मथा जा रहा है तो; दधि-मंथनतीव्रघोषाः = दधिमंथन की तीव्र ध्वनि से भरी; ककुभः = दिशाएं; कुंभाश्च = और घडे आपस में; रोषात् = क्रोध से; कलि = झगडा; विदधते = कर रहे हैं; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषाचलपति प्रभो; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

ग्वालों के घरों में स्त्री जनों से बढिया दही के मथ जाने पर जो आवाज निकलती है उस से ऐसा लगता है कि दही के घड़ों और दिशाओं में परस्पर कलह हो रहा है। हे वेंकटेश्वर, तुम्हारा शुभोदय हो।

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
हर्तुं श्रियंकुवलयस्यनिजांगलक्ष्म्या।
भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादं
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

पद्मेशमित्रशतपत्र गतालिवर्गाः = कमलाकांत सूरज के मित्र शत-पत्रवाले पद्मों से भौंरों का समूह; निजांगलक्ष्म्या = अपने शरीर की कांति से; कुवलयस्य = नीले कुवलयों की; श्रियं = कांति को; हर्तुं = हरने के लिए; भेरीनिनादमिव = भेरीवाद्य की आवाज जैसी; तीव्रनादं = तीव्र-ध्वनि; बिभ्रति = कर रहा है; शेषाद्रि शेखर विभो = हे शेषशैलाधीश; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो।

पद्मिनीवल्लभ सूरज के मित्र शतपत्र-पद्मों से निकलनेवाले भौंरों का समूह अपनी शरीरकांति से नीले कुवलयों की कांति को हरने केलिए भेरी निनाद जैसी—आवाज कर रहा हैं। हे शेषशैलाधीश, तुम्हारा शुभोदय हो।

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिल लोकबंधो
श्रीश्रीनिवास जगदेक दयैकसिंधो ।
श्रीदेवतागृह भुजांतर दिव्यमूर्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १३ ॥

श्रीमन् = लक्ष्मीयुक्त ; अभीष्टवरद = मनचाहे वर देनेवाले ; अखिल लोक बंधो = सारे जगत के बंधु ; श्री श्रीनिवास = श्री लक्ष्मी के निवासभूत ; जगदेक दयैक सिंधो = सारे जगत में दया के एकैक समुद्र ; श्री देवतागृह भुजांतर दिव्य मूर्ते = लक्ष्मी के आवासभूत वक्षोभाग से शोभित दिव्यविग्रहवाले ; श्रीवेंकटाचलपते = हे वेंकटाधीश्वर ; तव = तुम्हारा ; सुप्रभातम् = शुभोदय हो ।

हे श्रीनिवास, वेंकटाचलाधीश, तुम मनचाहे वर देनेवाले हो । सारे जगत के बंधु हो । पूज्य श्री लक्ष्मी के निवास स्थान हो । दुनियांभर में तुम ही एकैक दयानिधि हो । लक्ष्मी के निवास भूत वक्षोभाग से शोभित दिव्य आकृति वाले स्वामिन् , तुम्हारा शुभोदय हो ।

श्रीस्वामिपुष्करिणिकाप्लवनिर्मलांगा: ।
श्रेयोऽर्थिनो हर विरिंचि सनंदनाद्या: ।
द्वारे वसंति वरवेत्र हतोत्तमांगा:
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १४ ॥

श्रीस्वामिपुष्करिणिका प्लवनिर्मलांगा: = श्रीस्वामिपुष्करिणी में स्नान करने से विनिर्मल शरीरवाले हुए ; श्रेयोर्थिन: = श्रेय:कामी होकर ; हर विरिंचि सनंदनाद्या:=शिव, ब्रह्मा, सनंद आदि ; वरवेत्रहतोत्तमांगा:= द्वारपालों की छडियों से शिरो पर मार खाते ; द्वारे = द्वार पर ; बसंति = खड़े हैं ; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटाधीश्वर ; तव=तुम्हारा ; सुप्रभातम् = शुभोदय हो ।

ब्रह्मा, शिव, सनंदमहर्षि आदि सभी श्रेयःकामी लोग, स्वामि-पुष्करिणी में स्नान करके पुनीत हुए आकर, द्वारपालों की छड़ियों की मार सहते द्वार पर खड़े रहे हैं। हे वेंकटाद्रीश, तुम्हारा शुभोदय हो।

श्रीशेषशैल गरुडाचल वेंकटाद्रि
नारायणाद्रि वृषभाद्रि वृषाद्रिमुख्यान् ।
आख्यान् त्वदीयवसतेरनिशं वदंति
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १५ ॥

त्वदीयवसतेः = तुम्हारे आवास स्थान के; श्री, शेषशैल, गरुडाचल, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि मुख्यान् = श्रीशैल, शेषशैल, गरुडाचल, वेंकटाचल, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि जैसे; आख्यान् = नामों को; अनिशं = हमेशा; वदंति = कहा करते हैं; श्री वेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो।

हे वेंकटेश्वर, तुम्हारे आवास स्थान तिरुमल पहाड़ को श्रीशैल, शेषशैल, गरुडाचल, वेंकटाचल, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि, आदि कई नामों से सदा पुकारते हैं। हे सप्तगिरीश, तुम्हारा शुभोदय हो।

सेवापराः शिवसुरेशकृशानुधर्म
रक्षोऽबुनाथ पवमान धनाधिनाथाः ।
बद्धांजलि प्रविलसन्निजशीर्षदेशाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १६ ॥

शिवसुरेशकृशानु धर्म रक्षोऽबुनाथ पवमान धनाधिनाथाः = ईशान, इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु और कुबेर नाम के आठों दिक्पालक; बद्धांजलिप्रविलसन् निजशीर्ष देशाः = अंजलिबद्ध हाथों से शोभित शिरोभागवाले हुए; सेवापराः = तुम्हारी सेवा में तत्पर खड़े हैं; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

ईशान, इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, और कुबेर नामक आठों दिक्पाल, अंजलिबद्ध हाथों से शोभित शिरोंवाले होकर तुम्हारी सेवा करने आ खड़े हैं। हे श्रीवेंकटेश, तुम्हारा शुभोदय हो।

घाटीषु ते विहगराज मृगाधिराज
नागाधिराज गजराज हयाधिराजाः।
स्वस्वाधिकारमहिमादिकमर्थयंते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १७ ॥

ते = तुम्हारे; घाटीषु = गमनों में; विहगराज, मृगविराज, नागाधिराज, गजराज, हयाधिराजाः = गरुड, सिंह, शेषनाग, ऐरावत, उच्चैःश्रवा तो; स्वस्वाधिकार महिमादिकं = अपने अपने अधिकार और महत्व आदि को; अर्थयंते = चाहते हैं; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटाधीश; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो।

हे वेंकटाधीश, तुम्हारे गमनों में गरुड, सिंह, शेषनाग, ऐरावत और उच्चैःश्रव वाहन अपने अपने महत्व पूर्ण अधिकार गौरव की याचना कर रहे हैं। स्वामिन्, तुम्हारा शुभोदय हो।

सूर्येंदुभौमबुधवाक्पति काव्यसौरि
स्वर्भानुकेतु दिविषत्परिषत्प्रधानाः।
त्वद्दासदास चरमावधिदासदासाः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १८ ॥

सूर्येंदुभौम बुधवाक्पति काव्यसौरि स्वर्भानुकेतु दिविषत्परिषत् प्रधानाः = रवि, चंद्र, कुज, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु नामक देवसभा के प्रधान ग्रह; त्वद्दासदास चरमावधिदास दासाः = तुम्हारे दासों के दासों में जो सबसे अंत में है उसके दास हैं; श्रीवेंकटाचलपते = हे वेंकटाधीश्वर; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

रवि, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु नामके देव-सभासदस्य नौओं ग्रह तुम्हारे दासों के दासों में जो सबसे अंत में हो उसी के दास हैं। श्री वेंकटेश्वर, तुम्हारा शुभोदय हो।

त्वत्पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमांगाः
स्वर्गापवर्गनिरपेक्ष निजांतरंगाः ।
कल्पागमऽऽकलनयाऽऽकुलतां भजंते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ १९ ॥

त्वत्पादधूलि भरित स्फुरितोत्तमांगाः = तुम्हारे चरणों की धूल से शोभित शिरोंवाले भक्त लोग; स्वर्गापवर्ग निरपेक्षनिजांतरंगाः = स्वर्ग, मोक्ष जैसों की कामना से रहित मानस के होकर; कल्पागमाकलनया = दूसरे कल्प के आगमन की भावना से; आकुलतां = व्यथा को; भजंते = प्राप्त होते हैं; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव = तुम्हारा; सुप्र-भातम् = शुभोदय हो।

हे वेंकटेश्वर, तुम्हारी चरणधूलि को शिरों पर धारण करनेवाले भक्त लोग स्वर्ग मोक्ष आदि की चाह नहीं करते। किंतु वे दूसरे कल्प के आगमन की चिंता से व्याकुल होते हैं। (बाद के कल्प में इस पहाड़ की महिमा शायद कम हो, यही डर है।) प्रभो, तुम्हारा शुभोदय हो।

त्वद्गोपुराग्र शिखराणि निरीक्ष्यमाणाः
स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयंतः ।
मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयंते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २० ॥

मर्त्याः = मानव लोग; परमां = उत्कृष्ट; स्वर्गापवर्ग पदवीं = स्वर्ग लोक या मोक्ष का मार्ग; श्रयंत = प्राप्त करते हुए; त्वद्गोपुराग्र-शिखराणि = तुम्हारे मंदिर के गोपुर-शिखरों को; निरीक्ष्यमाणाः=देखने

पर; मनुष्य भुवने = मानव लोक में रहने की; मतिं = इच्छा को; आश्रयंते = प्राप्त करते हैं; श्री वेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटाद्रीश; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो।

स्वर्गलोक या मोक्ष को जानेवाले लोग भी मार्ग में तुम्हारे मंदिर के गोपुर - शिखरों को देखकर मानव लोक में ही रहने की इच्छा करते हैं। हे श्रीवेंकटेश, तुम्हारा शुभोदय हो।

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेक शरण्यमूर्ते।
श्रीमन्ननंतगरुडादिभिरर्चितांघ्रे
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २१ ॥

श्री भूमि नायक = श्रीदेवी और भूदेवी के नायक; दयादिगुणामृताब्धे = दया, गुण आदि के सुधासमुद्र; देवाधिदेव = देवताओं के प्रधान देव; जगदेक शरण्य मूर्ते = सारे जगत के असमान शरण्य रूप भगवान; श्रीमन् = संपद्युक्त; अनंत गरुडादिभिः = अनंत नाग, गरुत्मान् आदि से; अर्चितांघ्रे = पूजित चरणों वाले; श्रीवेंकटाचलपते = श्रीवेंकटाचलाधीश; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

श्रीदेवी और भूदेवी के नायक, हे वेंकटेश्वर, तुम दया जैसे दिव्य गुणों के सुधासमुद्र हो। हे देवाधिदेव, सारे जगत केलिए तुम ही एक मात्र शरण्य हो। हे श्रीमन्, तुम अनंत, गरुड आदि से पूजित पवित्र चरणों-वाले हो। हे स्वामिन्, तुम्हारा शुभोदय हो।

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुंठ माधव जनार्दन चक्रपाणे।
श्रीवत्सचिह्न शरणागत पारिजात
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २२ ॥

श्री पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, वासुदेव, वैकुंठ, माधव, जनार्दन, चक्रपाणे = हे पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, वासुदेव, वैकुंठ, माधव, जनार्दन, चक्रपाणि; श्रीवत्सचिह्न = श्रीवत्स नामक चिह्न से शोभित; शरणागत पारिजात = शरण में आये हुए लोगों केलिए पारिजात कल्पक के समान; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्री वेंकटाचलाधीश; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

हे पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, वासुदेव, वैकुंठ, माधव, जनार्दन, चक्रपाणि' श्रीवत्सलांछित, प्रभो, शरणागतकल्पक वेंकटाधीश, तुम्हारा शुभोदय हो।

कंदर्पदर्पहरसुंदरदिव्यमूर्ते
काांताकुचांबुरुहकुट्मलल्लोलदृष्टे ।
कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्यकीर्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २३ ॥

कंदर्पदर्प हर सुंदर दिव्य मूर्ते = मन्मथ के गर्व को दूर करनेवाले सुंदर दिव्य रूपवाले; कांताकुचांबुरुह कुट्मल लोल दृष्टे = प्रेयसी के पद्मकलियों जैसे कुचों पर आसक्तिपूर्ण दृष्टि रखनेवाले; कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्मूर्ते = शुभदायक निर्मलगुणों का निलय होनेवाली दिव्य कीर्तिवाले; श्रीवेंकटाचलपते = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

मन्मथ का गर्व हरनेवाले सुंदर दिव्यरूपवाले, पद्ममुकुलों जैसे प्रेयसी के कुचों पर आसक्तिमय दृष्टि रखनेवाले, अनंत कल्याण गुणों के आलवाल दिव्य कीर्तिवाले, हे श्रीवेंकटेश्वर, तुम्हारा शुभोदय हो।

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंहवर्णिन्
स्वामिन् परश्वथ तपोधन रामचंद्र ।
शेषांशराम यदुनंदन कल्किरूप
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २४ ॥

मीनाकृते = मत्स्यरूपधारी; कमठ = कूर्ममूर्ति; कोल = वराहरूपी; नृसिंह = नरसिंह मूर्ति; वर्णिन् = वटुरूप वामन व त्रिविक्रम रूपधारी; स्वामिन् = हे प्रभो; परश्वथ तपोधन = परशुधारी तपस्वी; रामचंद्र = श्री राम; शेषांशराम = बलराम; यदुनंदन = श्रीकृष्ण; कल्किरूप = कल्कि अवतार धारी; श्रीवेंकटाचलपते = श्रीवेंकटाधीश; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो ।

हे स्वामिन् तुम मत्स्य, कूर्म, वराह, नारसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम, बलराम, श्रीकृष्ण एवं कल्कि नामके दसों अवतारों को लोकोद्धरण केलिए धरे हुए हो । हे वेंकटेश्वर, तुम्हारा शुभोदय हो ।

एला लवंग घनसार सुगंधितीर्थं
दिव्यं वियत्सरसि हेमघटेषुपूर्णम् ।
धृत्वाद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
तिष्ठंति वेंकटपते तव सुप्रभातम् ॥ २५ ॥

वैदिक शिखामणयः = वैदिकोत्तम ब्राह्मण; एला लवंग घनसार सुगंधि = इलायची, लौंग, कर्पूर आदि से सुगंधित; दिव्यं = मनोज्ञ; तीर्थं = जल को; वियत्सरसि - दिवज गंगा से; हेम घटेषु = कनक कलशों में; पूर्णं = पूरा भरकर; धृत्वा = धरे हुए; प्रहृष्टाः = बड़े हर्ष से; अद्य = अभी; तिष्ठंति = खड़े हैं; वेंकटपते = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव सुप्रभातम् = तुम्हारा शुभोदय हो ।

वैदिक ब्राह्मणोत्तम लोग इलायची, लौंग, कर्पूर आदि से सुगंधित दिव्य तीर्थ को आकाशगंगा से कांचन कलशों में भरे लाकर, बडे हर्ष से तुम्हारी सेवा केलिए अभी आ खडे हैं । हे श्रीवेंकटाधीश, तुम्हारा शुभोदय हो ।

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
संपूरयंति निनदैः ककुभो विहंगाः ।

श्रीवैष्णवाः सततमर्थितमंगलास्ते
धामाश्रयंति तव वेंकट सुप्रभातम् ॥ २६ ॥

भास्वान् = सूरज; उदेति = निकल रहा है; सरोरुहाणि = कमल; विकचानि = खिले हैं; विहंगाः = चिड़ियां; निनदैः = अपने शब्दों से; ककुभः = दिशाओं को; संपूरयंति = भर रही है; श्रीवैष्णवाः = श्री वैष्णव जन; सततं = सदा; अर्थितमंगलाः = शुभों की चाह किये; ते = तुम्हारे; धाम = दिव्य मंदिर का; आश्रयंति = आश्रय ले रहे हैं; वेंकट = हे श्रीवेंकटेश्वर; तव = तुम्हारा; सुप्रभातम् = शुभोदय हो।

हे श्रीवेंकटेश्वर, सूरज निकल रहा है, कमल खिले हैं, चिड़ियां अपनी आवाज से दिशाएं भर रही हैं, वैष्णव जन शुभकामना करते हुए तुम्हारे सन्निधान में आ खड़े हैं, स्वामिन् तुम्हारा शुभोदय हो।

ब्रह्मादयःसुरवराः समहर्षयस्ते
संतः सनंदनमुखास्त्वथ योगिवर्याः।
धामांतिके तव हि मंगलवस्तुहस्ताः
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २७ ॥

ते = प्रसिद्ध; ब्रह्मादयः = ब्रह्मा आदि; सुरवराः=देवता गण; समहर्षयः=महर्षियों के साथ; अथ=और; संतः=सत्पुरुष; सनंदन मुखाः=सनंदन आदि; योगिवर्याः=योगी जन; तव=तुम्हारे; धामांतिके =मंदिर के समीप; मंगल वस्तुहस्ताः=पूजार्ह शोभन द्रव्यों को हाथ में लिये आये हैं; श्रीवेंकटाचल पते=हे श्रीवेंकटाधीश; तव=तुम्हारा; सुप्रभातम्=शुभोदय हो।

हे श्रीवेंकटेश्वर, ब्रह्मा आदि देवगण, महर्षि लोग सनंदन आदि योगी जन मंगल द्रव्यों को हाथ में लिये हुए तुम्हारे मंदिर के समीप आ खड़े हैं, स्वामिन्, तुम्हारा शुभोदय हो।

लक्ष्मीनिवासनिरवद्यगुणैकसिंधो
संसारसागर समुत्तरणैकसेतो।

वेदांतवेद्य निजवैभव भक्तभोग्य
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥ २८ ॥

लक्ष्मीनिवास=लक्ष्मीदेवी के आवास; निरवद्य गुणैक सिंधो=निर्मल गुणों का एक मात्र समुद्र जैसें स्वामी; ससार सागर समुत्तरणैक सेतो= संसाररूपी समुद्र को तरने केलिए सेतु के समान भगवान; वेदांतवेद्य निजवैभव=उपनिषदों में व्यक्त निज वैभववाले; भक्त भोग्य=भक्त जनों से अनुभवनीय; श्रीवेंकटाचल पते=हे श्रीवेंकटेश्वर; तव=तुम्हारा; सुप्रभातम्=शुभोदय हो।

हे श्रीवेंकटेश्वर, लक्ष्मीनाथ, कल्याणगुणसमुद्र, संसार समुद्र के सेतु, उपनिषदों में वर्णित वैभववाले, भक्त भोग्य भगवान्, तुम्हारा शुभोदय हो।

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातं
ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः ।
तेषां प्रभातसमये स्मृतिरंगभाजां
प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते ॥ २९ ॥

इत्थं=उस प्रकार; वृषाचलपतेः=श्रीवेंकटेश्वर के; इह=इस प्रातःकालीन; सुप्रभातम्=सुप्रभात स्तोत्र को; ये मानवाः=जो लोग; प्रतिदिनं=हर रोज; प्रभात समये=प्रभातकाल में; पठितुं=पढ़न में; प्रवृत्ताः=लगे रहते हैं; तेषां=उन; अंगभाजां=भक्त जनों को; स्मृतिः=यह वेंकटेश-स्मरण; परार्थसुलभां=परमार्थदायिनी; प्रज्ञां=श्रेष्ठ प्रज्ञा को; प्रसूते=देता है।

हर दिन प्रभातकाल में जो लोग इस सुप्रभात स्तोत्र को पढने में लगते हैं उनको यह श्रीवेंकटेश-स्मरण मोक्षसुलभ उत्तम प्रज्ञा को विकसित करता हैं।

कमलाकुचचूचुक कुंकुमतो
निततारुणितातुल नीलतनो ।
कमलायतलोचन लोकपते
विजयी भव वेंकटशैलपते ॥ १ ॥

कमलाकुचचूचुक कुंकुमतः=श्रीदेवी के कुच-चूचुकों पर के कुंकुम के रंग से; नियतारुणितातुल नीलतनो=नियत रूप से लाल बने हुए हे नील शरीरवाले; कमलायतलोचन=कमलों की तरह दीर्घ विकसित नेत्रों वाले; लोकपते=जगन्नाथक; वेंकटशैलपते=हे वेंकटाचलाधीश; विजयी भव=तुम विजयी बनो।

हे वेंकटाचलधीश, लक्ष्मी के कुच-चूचुकों पर के कुंकुम से लाल बने हुए हे नील शरीरवाले (कृष्ण), कमलों की तरह दीर्घ विकसित नेत्रोंवाले हे जगन्नाथ, तुम विजयी बनो।

सचतुर्मुख षण्मुख पंचमुख
प्रमुखाखिल दैवतमौलिमणे ।
शरणागतवत्सल सारनिधे
परिपालय मां वृषशैलपते ॥ २ ॥

सचतुर्मुख षण्मुख पंचमुख प्रमुखाखिल दैवत मौलिमणे=ब्रह्मा से लेकर शंकर, कुमारस्वामी आदि तक के सभी देवताओं के प्रधान; शरणागतवत्सल=शरण में आनेवालों के प्रति वात्सल्य दिखानेवाले; सारनिधे=बल पौरुषों के निधान; वृषशैलपते=हे वेंकटाधीश; मां=मेरा; परिपालय=पालन (रक्षण) करो।

ब्रह्मा, शंकर, कुमार जैसे सभी देवताओं के प्रधान, शरण में आने-वालों के प्रति वत्सलता से बरतनेवाले, बल-पौरुषों के निधान, हे वेंकटाधीश, मेरी रक्षा करो।

अतिवेलतया तव दुर्विषहै

रनुवेलकृतैरपराधशतैः ।

भरितं त्वरितं वृषशैलपते

परया कृपया परिपाहि हरे ॥ ३ ॥

अतिवेलतया=सीमातीत होकर; तव=तुमको; दुर्विषहैः=दुस्सह होते हुए; अनुवेलकृतैः=हमेशा किये गये; अपराधशतैः=सैंकडों अपराधों से; भरितं=भरे हुए (मां - मुझे); त्वरितं=जल्दी से; वृषशैलपते=हे वेंकटाधीश; हरे=श्रीहरि; परया=उत्कृष्ट; कृपया=दया से; परिपाहि= रक्षित करो ।

हे श्री वेंकटेश, असीम और असहनीय सैकड़ों अपराधों को सदा किये हुए मुझे अपनी उत्कृष्ट कृपा से जल्दी ही सुरक्षित करो ।

अधिवेंकटशैलमुदारमते-

र्जनताभिमताधिकदानरतात् ।

परदेवतयागदितान्निगमैः

कमलादयितान्न परं कलये ॥ ४ ॥

अधिवेंकटशैलं=श्री वेंकटाचल पर; उदारमतेः=उदार मन से; जनताभिमताधिकदानरतात्=जनसमूह की कामनाओं को मांग से अधिक देने में आसक्त रहते; निगमैः=वेदों से; परदेवतया=सब से श्रेष्ठ देवता कहकर; गदितात्=वर्णित हुए; कमलादयितात्=लक्ष्मीनाथ श्रीवेंकटनाथ से; परं=इतर जो होता है उसकी; न कलये=सेवा मैं कभी नहीं करता।

श्री वेंकटशैल पर प्रत्यक्ष रहकर, उदारचित्त से लोगों की कामनाओं को, मांग से अधिक देने में आसक्ति दिखानेवाले, और वेदों में श्रेष्ठ देवता करके वर्णित होनेवाले, लक्ष्मीनाथ श्री वेंकटेश्वर से अन्य किसी भी देवता की सेवा में कभी नहीं करता ।

कलवेणुरवावशगोपवधू
शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात् ।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदात्
वसुदेवसुतान्न परंकलये ॥ ५ ॥

कलवेणुरवावश गोपवधूशतकोटि वृतात्=बांसुरी के सुमधुर निनाद से आकृष्ट सहस्रों गोपियों से घेरे रहनेवाले; स्मरकोटि समात्=करोडों मन्मथों से समान रूपवाले; सुखदात्=सुख देनेवाले; प्रतिवल्लविकाभिमतात्=हर एक गोपी के प्रिय; वसुदेवसुतात्=वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण से; परं=दूसरे को; न कलये=मैं नहीं जानता ।

बांसुरी के निनाद से आकृष्ट गोपिका सहस्र से घेरे रहनेवाले, कोटि मन्मथों के समान सुंदर रूप वाले, सुख देने वाले, हर गोपी के प्रिय, वसुदेव के पुत्र, श्री कृष्ण को छोड, अन्य किसी को मैं नहीं जानता ।

अभिरामगुणाकर दाशरथे
जगदेकधनुर्धर धीरमते ।
रघुनायक राम रमेश विभो
वरदो भव देव दयाजलधे ॥ ६ ॥

अभिरामगुणाकर=मनोज्ञगुणों के स्थान; दाशरथे=हे दशरथ के पुत्र; जगदेकधनुर्धर=सारे लोक में असमान धनुर्धारी वीर; धीरमते=धैर्यवान्; रघुनायक=रघुवंश के नायक; राम=हे श्रीराम; रमेश=लक्ष्मी-नाथ; विभो=सर्वव्यापी भगवान्; दयाजलधे=दयासमुद्र; देव=स्वामी; वरदो भव=मेरेलिए वरप्रद बनो ।

सुमनोहर गुणोंवाले दशरथ के पुत्र श्रीराम, तुम लोक में असमान धनुर्धारी वीर औंर धीर हो । रघुवंश में श्रेष्ठ, हे दयासमुद्र रामचंद्र, लक्ष्मी नाथ, भगवान्, मेरे लिए वरप्रद बनो ।

अवनीतनया कमनीयकरं
रजनीकरचारुमुखांबुरुहम् ।
रजनीचरराजतमोमिहिरं
महनीयमहं रघुराममये ॥ ७ ॥

अवनीतनयाकमनीयकरं=भू पुत्री सीता से कामित हस्तवाले ; रजनीचरराजतमोमिहिरं=रात्रिचर राक्षसों के राजा रावण रूपी अंधकार के सूर्य जैसे ; महनीयं=महात्मा ; रघुरामं=राघव राम को ; अहं=मैं ; अये=प्राप्त करता हूं ।

भूपुत्री सीता को प्रिय लगनेवाले, चंद्रमा जैसे सुंदर मुख कमलवाले, राक्षसराज रावण रूपी अंधकार के सूरज जैसे तेजवाले, महात्मा रघुराम जो हैं, मैं उनकी शरण जाता हूं ।

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं
स्वनुजं च सुखायममोघशरम् ।
अपहाय रघूद्वह मन्यमहं
न कथंचन कंचन जातु भजे ॥ ८ ॥

सुमुखं=सुंदर मुखवाले ; सुहृदं=अच्छे मनवाले ; सुलभं=आसानी से प्राप्त होनेवाले ; स्वनुजं=अच्छे भाइयों वाले ; सुकायं=सुंदर शरीरवाले ; अमोघशरं=व्यर्थ न होनेवाले बाणवाले ; रघूद्वहं=रघुकुलोद्धारक श्रीराम को ; अपहाय=छोड़कर ; अन्यं=दूसरे ; कंचन=किसी को भी ; अहं=मैं ; कथंचन=किसी भी तरह ; न भजे=सेवा नहीं करता ।

सुंदर मुखवाले, अच्छे मनवाले, आसानी से प्राप्त होनेवाले, अच्छे भाइयों वाले, सुंदर शरीरवाले, व्यर्थ न जाने वाले बाण वाले, रघुवंशोद्धारक, श्री राम को छोड़कर - मैं किसी - दूसरे की सेवा किसी भी तरह नहीं करता ।

विना वेंकटेशं न नाथो न नाथः
सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि ।
हरे वेंकटेश प्रसीद प्रसीद
प्रियं वेंकटेश प्रयच्छ प्रयच्छ ॥ ९ ॥

विना वेंकटेशं=श्रीवेंकटेश के सिवाय; नाथः=नाथ कहलाने लायक; न=कोई नहीं है; नाथः=आलंब होनेवाला; न=नहीं है; सदा=हमेशा; वेंकटेशं=श्रीवेंकटेश का; स्मरामि=स्मरण करता हूं; स्मरामि=ध्यान करता हूँ; हरे वेंकटेश=हे श्री हरि, वेंकटेश्वर; प्रसीद=अनुग्रह करो; प्रसीद=प्रसन्न बनो; वेंकटेश=हे वेंकटेश्वर; प्रियं=मेरे इष्ट को; प्रयच्छ, प्रयच्छ=दे दो ।

हे वेंकटेश्वर, तुम्हारे सिवा और कोई मेरा नाथ नहीं है । हमेशा में वेंकटेश का स्मरण करता हूं । हे श्रीहरि, वेंकटेश्वर प्रसन्न बनो । अभीष्ट करो ।

अहं दूरतस्ते पदांभोजयुग्म-
प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि,
सकृत् सेवया नित्यसेवाफलं त्वं
प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेंकटेश ॥ १० ॥

प्रभो=हे स्वामिन्; वेंकटेश=वेंकटेश्वर; अहं=मैं; दूरतः=दूर से; ते=तुम्हारे; पदांभोजयुग्मप्रणामेच्छया=पाद-पद्म-द्वय को प्रणाम करने की इच्छा से; आगत्य=आकर; सेवां=तुम्हारी सेवा; करोमि=कर रहा हूं; सकृत् सेवया=इस थोडी सी सेवा से ही; नित्य-सेवा फलं=अनुनित्य की सेवा का फल; त्वं=तुम; प्रयच्छ प्रयच्छ=दे दो।

हे स्वामिन् श्री वेंकटेश्वर, मैं तुम्हारे चरणों को प्रणाम करने की इच्छा से दूर से आकर सेवा कर रहा हूं । अबकी मेरी इस सेवा से ही तुम प्रसन्न होकर नित्य सेवा-फल प्रदान करो ।

अज्ञानिनामयादोषान्
अशेषान् विहितान् हरे ।
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं
शेषशैल शिखामणे ॥ ११ ॥

शेषशैलशिखामणे=शेषाचल के प्रधान, हे श्रीवेंकटेश्वर; हरे=श्रीकृष्ण; अज्ञानिना=ज्ञानरहित; मया=मुझ से; विहितान्=किये गये; अशेषान्=सभी; दोषान्=दोषों को; त्वं=तुम; क्षमस्व=माफ करो; त्वं क्षमस्व=तुम क्षमा करो ।

हे शेषशैल शिखामणि, हरि, श्रीवेंकटेश्वर, मुझ ज्ञानहीन से किये गये सभी अपराधों को तुम माफ करो, माफ करो ।

॥ श्रीवेङ्कटेशप्रपत्तिः ॥

ईशानां जगतोऽस्य वेंकटपते र्विष्णोः परां प्रेयसीं
तद्वक्षस्थल नित्यवासरसिकां तत्क्षांतिसंवर्धिनीम् ।
पद्मालंकृत पाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
वात्सल्यदि गुणोज्ज्वलां भगवतीं वंदे जगन्मातरम् ॥१॥

अस्य जगतः=इस जगत की; ईशानां=राणी; वेंकटपतेः=वेंकटेश; विष्णोः=श्री महाविष्णु की; परां=परम; प्रेयसीं=प्रिया; तद्वक्षस्थल=नित्यवासरसिकां=उस भगवान की छाती में नित्य निवास करने में आसक्ति दिखानेवाली; तत्क्षांतिसंवर्धिनीं=उस देव की क्षमाशक्ति को बढानेवाली; पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां=पद्मों से अलंकृत पल्लव जैसे कोमल हस्तद्वय-वाली; पद्मासनस्थां=कमलासन पर स्थित; वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां=वात्सल्य आदि दिव्य गुणों से प्रकाशित; जगन्मातरं=लोकमाता; भगवतीं=भगवती; श्रियं=लक्ष्मी देवी को; वंदे=मैं नमस्कार करता हूँ ।

इस जगत की रानी, वेंकटेश की परम प्रेयसी, उस के वक्षस्थल में सदा रहने में आसक्ति दिखानेवाली, उस भगवान की क्षमाशक्ति को बढाने-

वाली, पद्मों से अलंकृत पल्लव जैसे कोमल हस्त द्वय वाली, पद्मासन में स्थित, वात्सल्य आदि दिव्य गुणों से उज्जवल, लोक माता, भगवती, श्रीलक्ष्मी को मैं नमस्कार करता हूं।

श्रीमन् कृपा जलनिधे कृतसर्वलोक
सर्वज्ञ शक्त नतवत्सल सर्वशेषिन्।
स्वामिन् सुशील सुलभाश्रितपरिजात
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

श्रीमन्=सपद्युक्त; कृपाजलनिधे=दयासमुद्र; कृतसर्वलोक=सभी लोकों के कर्ता; सर्वज्ञ=सब जाननेवाले; शक्त=समर्थ; नत वत्सल= भक्तों के प्रति वात्सल्य दिखलानेवाले; सर्वशेषिन्=जडचेतन रूपी इस सारे संसार के शरीर रूप वाले; स्वामिन्=हे स्वामी; सुशील=अच्छे शीलवाले; सुलभ=आसानी से प्राप्य होनेवाले; आश्रितपारिजात= आश्रित जनों के लिए पारिजात कल्पक जैसे; श्रीवेंकटेश=हे श्रीवेंकटेश्वर; चरणौ=तुम्हारे चरणों की; शरणं=शरण; प्रपद्ये=पा रहा हूँ।

हे श्री वेंकटेश्वर, तुम श्रीमान् हो, दया समुद्र हो, सभी लोकों के कर्ता हो, सब जानते हो। तुम समर्थ हो, भक्तवत्सल हो। जड चेतन रूपी सारा संसार तुम्हारा शरीर है और तुम उस के अंगी हो। तुम सौशील्य सौलभ्य गुणों वाले हो। आश्रित जनों के लिए पारिजात कल्पक जैसे अभीष्ट वरद हो। प्रभो में तुम्हारे चरणों में शरण लेता हूं।

आनूपुरार्पित सुजात सुगंधिपुष्प
सौरभ्य सौरभ करौ समसन्निवेशौ।
सौम्यौ सदानुभवनेऽपि नवानुभाव्यौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

आनूपुरार्पित सुजात सुगंधिपुष्प सौरम्य सौरभ करौ=पादनूपुरों तक समर्पित सुगंधिल फूलों की सुगंध को भी सुगंधिल करनेवाले; समसन्नि-

वेशौ=समान रखे हुए ; सौम्यौ=प्रसन्न रहनेवाले ; सदा=हमेशा ; अनुभवनेऽपि=अनुभव करते रहने पर भी ; नवानुभाव्यौ=नूतन जैसे प्रियानुभव देनेवाले ; श्रीवेंकटेशचरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों की ; शरण प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ ।

पावों में नूपुरों तक समर्पित अच्छे सुगंधित फूलों की गंध को भी सुगंधित करनेवाले, समान सन्निवेशवाले, प्रसन्न एवं नित्य नूतन अनुभव देनेवाले श्री वेंकटेश के चरणों में मैं शरण लेता हूँ ।

सद्योविकासि समुदित्वर सांद्रराग
सौरभ्यनिर्भर सरोरुह साम्यवार्ताम् ।
सम्यक्षु साहस पदेषु विलेखयंतौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

सद्योविकासि समुदित्वर सांद्रराग सौरभ्यनिर्भर सरोरुह साम्यवार्ताम्= अभी अभी विकसित होते खूब निकलनेवाली लाली और सुगंध से भरे हुए पद्मों से समानता की बात ; सम्यक्षु=सुंदर ; साहसपदेषु=त्वरायुक्त पादचिह्नों के ; विलेखयंतौ=लिखानेवाले; श्रीवेंकटेश चरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में ; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ ।

अभी अभी खिलकर, खूब निकलनेवाली लाली व सुगंध से भरे हुए पद्मों से समानता की बात, सुंदर व त्वरायुक्त पादचिह्नों में लिखानेवाले (अर्थात् पद्मों से उपमित करने का बड़ा साहस कार्य मुझ से करानेवाले) श्री वेंकटेश्वर के चरणों में मैं शरण लेता हूँ ।

रेखामयध्वज सुधाकलशातपत्र
वज्रांकुशांबुरुह कल्पक शंखचक्रैः ।
भव्यैरलंकृत तलौ परतत्वचिह्नैः
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

भव्यैः=शुभदायक; रेखामयध्वज सुधाकलशातपत्र वज्रांकुशांबुरुह कल्पक शंख चक्रैः=रेखाओं में दीखनेवाले झंडा, अमृतकलश, छाता, वज्र, अंकुश, कमल, कल्पवृक्ष, शंख और चक्र रूपी; परतत्त्वचिह्नैः=परमार्थ चिह्नों से; अलंकृततलौ=शोभित पादतल प्रदेशवाले; श्रीवेंकटेश चरणौ= श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ।

मंगलकारी रेखाओं के रूप में दीखनेवाले, झंडा, अमृत कलश, छाता, वज्र, अंकुश, कमल, कल्पवृक्ष, शंख और चक्र रूपी परमार्थ चिह्नों से शोभित तलों वाले श्री वेंकटेश्वर के पावों में मैं आश्रय लेता हूँ।

ताम्रोदर द्युति पराजित पद्मरागौ
बाह्यैर्महोभिरभिभूत महेंद्र नीलौ।
उद्यन्नखांशुभिरुदस्त शशांकभासौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

ताम्रोदरद्युतिपराजितपद्मरागौ=अंतस की लाली से पद्मरागमणियों की कांति को हरानेवाले; बाह्यैः=बाहर की; महोभिः=कांति से; अभिभूत महेंद्रनीलौ=इंद्रनीलमणियों को तिरस्कृति करनेवाले; उद्यन्नखांशुभिः= ऊपर उभरते हुए नाखूनों की कांति से; उदस्त शशांक भासौ=चंद्रमा की कांति को हरानेवाले; श्रीवेंकटेश चरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में: शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ।

अंतसकी लाली से पद्मरागमणियों को, बाहर की कांति से इंद्रनील मणियों को और उभरते हुए नाखूनों की कांति से चंद्रमा को तिरस्कृत करनेवाले श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में मैं शरण लेता हूँ।

सप्रेमभीति कमलाकर पल्लवाभ्यां
संवाहनेऽपि सपदि क्लममाददानौ।
कांताववाङ्मनसगोचर सौकुमार्यौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

कमला कर पल्लवाभ्यां=श्री महालक्ष्मी के हस्त पल्लवों से; सप्रेम भीति=प्रेम और भय के साथ; संबाहनेऽपि=दबाये जाने पर भी; सपदि=तत्क्षण; क्लमं=क्लाति (बाधा) को; आददानौ=प्राप्त करने वाले; कांतौ=सुंदर; अवाङ्मनसगोचर सौकुमार्यौ=वाक् और मन से जानने में न आनेवाली कोमलता से युक्त; श्रीवेंकटेश चरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण पाता हूं।

श्री लक्ष्मी के कोमल हस्त पल्लवों से, प्रेम और भय के साथ धीरे धीरे दवाये जाने पर भी तत्क्षण क्लांत होने वाले, मन और वाक् के अगोचर सौकुमार्य से युक्त रहनेवाले, श्री वेंकटेश्वर के सुंदर चरणों में आश्रय पाता हूं।

लक्ष्मी मही तदनुरूप निजानुभाव
नीलादि दिव्य महिषी कर पल्लवानाम्।
आरुण्य संक्रमणतः किल सांद्ररागौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

लक्ष्मी, मही तदनुरूप निजानुभावनीलादि दिव्यमहिषी कर पल्लवानाम्=लक्ष्मी, और भूमी के अनुरूप स्वानुभववाली नीला आदि दिव्य महिषियों के हस्त पल्लवों की; आरुण्य संक्रमणतः=लाली के मिलने से; सांद्ररागौ=प्रगाढ लाली के होनेवाले; श्रीवेंकटेश चरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों की; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूं।

श्री देवी, भूदेवी और उनके समान स्वानुभववाली नीलादेवी आदि दिव्य महर्षियों के हस्त पल्लवों की लाली से मिलकर और अधिक लाल दीखनेवाले श्री वेंकटेश्वर के चरणों में मैं शरण लेता हूं।

नित्यानमद्विधिशिवादि किरीट कोटि
प्रत्युप्तदीप्त नव रत्न महः प्ररोहैः।

नीराजनाविधिमुदार मुपादधानौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

नित्यानमद् विधि शिवादि किरीट कोटि प्रत्युत् प्रदीप्त नव रत्न महः प्ररोहैः=सदा नमस्कार करते रहनेवाले ब्रह्मा, शिव आदि के किरीटों में जडे हुए नौवोंरत्नों की कांतिकिरणों से; मीराजनाविधि=नीराजन (आरती) की क्रिया को; आदधानौ=प्राप्त करनेवाले; श्रीवेंकटेश चरणौ=श्रीवेंकटेश्वर के चरणों में; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ।

अनुनित्य नमस्कार करनेवाले ब्रह्मा, शिव जैसों के किरीटों में शोभित नौओं रत्नों की कांति से नीराजन की क्रिया पानेवाले श्री वेंकटेश्वर के पावों में मैं शरण लेता हूँ।

'विष्णोः पदे परम इत्युदितप्रशंसौ
यौ 'मध्व उत्स' इति भोग्यतयाऽप्युपात्तौ।
भूयस्तयेति तव पाणितलप्रदिष्टौ
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥

"विष्णोःपदे परमे, मध्व उत्सः"=श्री विष्णुदेव के उत्कृष्ट आवास (वैकुंठ) में मधु का स्रोत; इति=करके; यौ=जो पादयुग्म; उदित प्रशंसौ=वेदों में प्रशंसित हैं; भोग्यतयाऽपि=अनुभवयोग्य होकर भी; उपात्तौ=प्रशंसित होते हैं; भूयः=फिर; तथेति=सही कहकर, (अर्थात् वैकुंठ में मधु के स्रोत की बात, सही है करके); तव=तुम्हारे; पाणितल प्रदिष्टौ=हाथ से निर्देश करके दिखलाने वाले; तौ चरणौ=तुम्हारे उन चरणों में; श्रीवेंकटेश=हे वेंकटेश्वर; शरणं प्रपद्ये=मैं शरण लेता हूँ।

हे श्री वेंकटेश्वर, ऋग्वेद में जो 'विष्णोः पदे परमे और मध्व उत्सः' कहकर प्रशंसित एवं अनुभव में आकर भी प्रशंसित तथा उस बात को सही कहकर तुम्हारे हाथ से निर्दिष्ट होते दीखने वाले, तुम्हारे उन दिव्य चरणों में आश्रय लेता हूँ।

पार्थाय तत्सदृश सारथिना त्वयैव
यौ दर्शितौ स्वचरणौ शरणं व्रजेति ।
भूयोऽपि मह्यमिह तौ करदर्शितौ ते
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥

पार्थाय=अर्जुन को ; तत्सदृश सारथिना=उसके अनुरूप सारथि बने हुए ; त्वयैव=तुम से ही ; यौ=जो ; स्वचरणौ=स्वीय चरणयुगल ; शरणं व्रजेति=शरण में जाओ, करके ; दर्शितौ=दिखाये गये हैं ; तौ=वेही चरण युगल ; भूयोऽपि=फिर से ; मह्यं=मुझको ; इस=यहां इस वेंकटाचल पर ; कर दर्शितौ=हाथ से दिखाये गये हैं ; श्रीवेंकटेश=हे श्रीवेंकटेश्वर ; ते=तुम्हारे ; चरणौ=चरणों की ; शरणं प्रपद्ये=शरण पा रहा हूं ।

शरण में जाने के लिए अर्जुन को तदनुरूप सारथि बने तुम से ही जो चरण युगल दिखाये गये हैं, वे ही फिर यहां वेंकटाचल पर मुझे हाथ से दिखाये गये हैं । हे श्री वेंकटेश्वर, मैं उन चरणों की शरण पा रहा हूँ ।

मन्मूर्ध्नि कालियफणे विकटाटवीषु
श्रीवेंकटाद्रि शिखरे शिरसि श्रुतीनाम् ।
चित्तेप्यानन्य मनसां समाहितौ ते
श्रीवेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥

श्री वेंकटेश्वर = हे वेंकटेश्वर; मन्मूर्ध्नि = मेरे शिर पर, कालिय फणे = कालिय नाग के फणों पर; विकाटाटवीषु = दुर्गम अरण्यों में; श्रीवेंकटाद्रि शिखरे = श्री वेंकटाचल के शिखर पर; श्रुतीनां शिरसि =वेदों के शीर्ष उपनिषदों में; अनन्यमनसां = भगवद्ध्यान को छोड अन्य कोई चिंता न करनेवाले योगिजनों के; चित्तेऽपि = मन में भी,

समं = समान रूप से; आहितौ = रखे हुए; ते = तुम्हारे; चरणौ = चरणों की; शरणं प्रपद्ये = शरण पा रहा हूँ।

हे श्री वेंकटेश्वर, मुझ पापी के शिर पर, कालिय नाग के फणों पर, श्री वेंकटाचल के शिखर पर, दुर्गचारण्यों में, वेदशीर्ष उपनिषदों में और अनन्य ध्यानयोगी भक्तों के दिल में समान रूप से रखे हुए तुम्हारे चरणों की मैं शरण लेता हूँ।

अम्लानहृष्यदवनीतलकीर्णपुष्पौ
श्री वेंकटाद्रि शिखराभरणायमानौ।
आनंदिताखिल मनो नयनौ तवै तौ
श्री वेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १३ ॥

श्री वेंकटेश = हे वेंकटेश्वर; आम्लानदृष्य दवनीतल कीर्णपुष्पौ = खिले हुए, असूखे, जमीन पर बिखरे हुए, फूलों से शोभित; श्री वेंकटाद्रि शिखराथराणायमानौ = श्री वेंकटाचल के शिखर पर अलंकार जैसे शोभित; आनंदिताखिल मनो नयनौ = सभी के मन व आंखों को आनंदप्रद; तव = तुम्हारे; एतौ = इन; चरणौ = चरणों की; शरणं प्रपद्ये = मैं शरण ले रहा हूँ।

हे वेंकटाधीश, तुम्हारे चरणों में अर्पित होने से कभी न सूखे खून विकसित होकर, जमीन पर बिखरे हुए फूल जो हैं, उनसे शोभित होनेवाले श्री वेंकटाचल के शिखर पर अलंकार की तरह दीखनेवाले तथा सभी लोगों के मन और नेत्रों को आनंद देनेवाले तुम्हारे इन दिव्य चरणों में मैं आश्रय लेता हूँ।

प्रायः प्रपन्नजनता प्रथमावगाह्यौ
मातुः स्तनाविव शिशोऽमृतायमानौ।
प्राप्तौ परस्पर तुला मतुलांतरौ ते
श्री वेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १४ ॥

श्री वेंकटेश = हे श्री वेंकटेश्वर; प्रायः =अक्सर; प्रपन्नजनता प्रथमावगाह्यौ = प्रपन्न लोगों से सबसे पहले गृहीत होनेवाले; शिशोः = बच्चे को; मातुः स्तनाविव = माता के स्तनों की तरह; अमृतायमानौ = अमृत के समान होनेवाले; अतुलांतरौ=दूसरे पदार्थों से साम्य न रखनेवाले, परस्पर तुलां = आपस में साम्य रखनेवाले; ते चरणौ = तुम्हारे चरणों की; शरणं प्रपद्ये = मैं शरण पा रहा हूँ ।

हे वेंकटेश्वर, तुम्हारे भक्तों से प्रप्रथम ग्रहणीय होनेवाले, बच्चे को मां के स्तनों की तरह अमृत-से लगने वाले, आपस में साम्य और दूसरी वस्तुओं से असाम्य रखनेवाले तुम्हारे चरणों में मैं शरण पा रहा हूँ ।

सत्त्वोत्तरैस्सतत सेव्यपदांबुजेन
संसार तारक दयार्द्र दृगंचलेन ।
सौम्योपयंतृ मुनिना मम दर्शितौ ते
श्री वेंकटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १५ ॥

श्री वेंकटेश = हे वेंकटेश्वर; सत्त्वोत्तरैः = सात्विक जनों से; सतत सेव्य पदांबुजेन = सदा सेवित पाद पद्मोंवाले; संसार तारक दयार्द्र-दृगं चलेन = संसार तारण करनेवाले दयार्द्र कटाक्षोंवाले; सौम्योपयंतृ मुनिना= सौम्य जामातृ मुनि से; मम = मुझे; दर्शितौ = दिखाये हुए; ते=तुम्हारे चरणौ = चरणों में; शरणं प्रपद्ये =शरण ले रहा हूँ ।

हे वेंकटेश्वर, सात्विक जनों से सदा सेवित होनेवाले और संसार का तारण करनेवाले कृपा-कटाक्षों वाले सौम्य जामातृ मुनि से मुझे जो दिखाये गये हैं, तुम्हारे उन दिव्य चरणों में मैं शरण ले रहा हूँ ।

श्रीश श्रिया घटिकया त्वदुपाय भावे
प्राप्ये त्वयि स्वयमुपेयतया स्फुरंत्या ।
नित्याश्रिताय निरवद्यगुणाय तुभ्यं
स्यां किंकरो वृषगिरीश न जातु मह्यम् ॥ १६ ॥

श्रीश = हे लक्ष्मीनाथ; त्वदुपादभावे = तुम परमपद की साधना के लिए उपाय जैसे रहते हो; घटिकया = संधानकर्त्री होकर; त्वयि प्राप्ये सति = तुम्हारे प्राप्य हो जाने पर; स्वयं = खुद; उपेयतया = साध्य-रूप से; स्फुरंत्या = विराजनेवाली; श्रिया = लक्ष्मीदेवी के; नित्याश्रिताय = सदा आश्रय रहनेवाले हो; निरवद्यगुणाय = श्रेष्ठगुणोंवाले हो; तुभ्यं = तुम्हारा; किंकरः = सेवक; स्यां = हो रहा हूँ; मह्यं = मैं अपना; जातु = कभी भी; न स्यां = (सेवक) नहीं बनता।

हे लक्ष्मीनाथ, तुम भक्तों के लिए परमपद की प्राप्ति का उपाय हो, संधान करने वाली लक्ष्मी, तुम्हारे प्राप्त हो जाने पर स्वयं उपेय भूत हो जाती है। ऐसी लक्ष्मी को सदा आश्रय रहनेवाले और अकल्मष गुणों-वाले स्वामी, मैं तुम्हारे लिए सेवक बनता हूँ। अपने लिए कभी नहीं।

॥ श्रीवेङ्कटेशमङ्गलाशासनम् ॥

श्रियः कांताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्री वेंकटनिवासाय श्रीनिवासायमंगलम् ॥ १ ॥

श्रियः = लक्ष्मी के; कांताय = प्रिय; कल्याणनिधये = शुभों के स्थान; अर्थिनां = याचकों केलिए; निधये = खान जैसे; श्रीवेंकटेशाय = श्री वेंकटा-चल पर निवास करनेवाले; श्रीनिवासाय = श्री श्रीनिवासका; मंगलम् = शुभ हो।

लक्ष्मी देवी के प्रिय, सभी शुभों के आलवाल, याचकों के खान, वेंकटाद्रिवासी श्री श्रीनिवास का मंगल हो।

लक्ष्मी सविभ्रमालोक सुभ्रूविभ्रम चक्षुषे।
चक्षुषे सर्वलोकानां वेंकटेशाय मंगलम् ॥ २ ॥

लक्ष्मी देवी की ओर सविलास देखनेवाले सुंदर भुवों से युक्त नेत्रों-वाले, सभी लोकों के नेत्र जैसे श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

लक्ष्मीसविभ्रमालोक सुभ्रूविभ्रम चक्षुषे = लक्ष्मी को सविलास देखने-वाले सुंदर भ्रुवों के नेत्रोंवाले; सर्वलोकानां = सभी लोकों (प्राणियों) के

लिए; चक्षुषे=नेत्र जैसे; वेंकटेशाय=श्री वेंकटेश का; मंगलम्=मंगल हो।

श्री वेंकटाद्रि के शिखर के शुभालंकार जैसे पावों वाले, मंगलों के निवास स्थान, श्रीनिवास भगवान का मंगल हो।

श्री वेंकटाद्रि शृंगाग्रमंगलाभराणांघ्रये।
मंगलानां निवासाय श्रीनिवासाय मंगलम् ॥ ३ ॥

श्री वेंकटाद्रि शृंगाग्रमंगलाभरणांघ्रये=श्री वेंकटाचल के शिखराग्र के मंगलमय अलंकार जैसे पावोंवाले; मंगलानां = मंगलों के; निवासाय = निवासस्थान होनेवाले; श्रीनिवास = श्री श्रीनिवास का; मंगलं = मंगल हो।

सर्वावयवसौंदर्य संपदा सर्वचेतसाम्।
सदा सम्मोहनायाऽस्तु वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ४ ॥

सर्वावयवसौंदर्य संपदा = सभी अवयवों के सौंदर्य रूपी संपदा से; सर्व चेतसां = सभी लोगों को; सदा = हमेशा; सम्मोहनाय=सम्मोहित करनेवाले; वेंकटेशाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल; हो।

अपने सभी - अंगों के सौंदर्य रूपी संपदा से सब को सम्मोहित करनेवाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

नित्याय निरवद्याय सत्यानंदचिदात्मने।
सर्वांतरात्मने श्रीमद् वेंकटेशाय मंगलम ॥ ५ ॥

नित्याय = त्रिकालाबाध्य; निरवद्याय = दोषरहित; सत्यानंद चिदात्मने=सत्य आनंद और चित् रूपोंवाले; सर्वांतरात्मने = सभी जीवों के अंतरात्मा; श्री वेंकटेशाय = श्री वेंकटेश का; मंगलम् = मंगल हो।

जो त्रिकालाबाध्य, दोष रहित एवं सत्य, आनंद और चित् रूपों वाले हैं और सभी जीवों के अंतरात्मा हैं उन भगवान श्री वेंकटेश का मंगल हो।

स्वतः सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे।
सुलभाय सुशीलाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ६ ॥

स्वतः = अपने आप ही; सर्वविदे = सब जाननेवाले; सर्वशक्तये = समस्त शक्ति संपन्न; सर्वशेषिणे; सब के प्रधान; सुलभाय = सुलभप्राप्य; सुशीलाय = सुशीलवाले; वेंकटेशाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल हो।

आप ही सब कुछ जाननेवाले, शक्तिमान, सब के प्रधान, सुलभ प्राप्य, सुशीलवाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने।
प्रयुंजे परतत्त्वाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ७ ॥

परस्मै ब्रह्मणे = परब्रह्मस्वरूपवाले; पूर्णकामाय = पूरी हुई सभी कामनाओंवाले; परमात्मने = परमात्मा; परतत्वाय = परतत्वरूपी; वेंक-टेशाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल हो।

परब्रह्मरूपी, पूर्णकाम, परमात्मा, परतत्त्व मूर्ति श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

आकालतत्त्वमश्रांत मात्मनामनुपश्यताम्।
अतृप्त्यमृतरूपाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ८ ॥

आकालतत्वम् = जब तक काल-तत्त्व रहे तब तक; अश्रांतम् = सदा; अनुपश्यताम् = दर्शन करनेवाले; आत्मानाम् = जीवों केलिए; अतृप्त्यमृत-रूपाय = अतृप्त अमृत के स्वरूपवाले; वेंकटेशाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल हो।

कालतत्त्व की चिंता न किये हमेशा भगवान के दिव्य रूप को देखनेवाले जीवों के लिए अतृप्त अमृत की तरह लगने वाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

प्राय: स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना।
कृपया दिशते श्री मद्वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ९ ॥

प्राय:=अकसर; पुंसां = मानवों को; शरण्यत्वेन=शरण्यता के रूप में; पाणिना=हाथ से; स्व चरणौ=अपने पाद युग को; कृपया = कृपा से; दिशते=निर्देश करके दिखानेवाले; श्री मद्वेंकटेशाय=श्री वेंकटेश्वर भगवान का; मंगलम् = मंगल हो।

सभी मानवों को परमशरण्य रूप में अपने दोनों चरणों को अपने ही हाथ से कृपा करके दिखानेवाले भगवान श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

दयाऽमृततरंगिण्यास्तरंगैरिव शीतलैः।
अपांगै: सिंचते विश्वं वेंकटेशाय मंगलम् ॥ १० ॥

दयाऽमृत तरंगिण्या: = दयारूपी अमृत के प्रवाह की; तरंगैरिव = लहरियों की तरह; शीतलै:=ठंढे लानेवाले; अपांगै: = कटाक्षोंसे; लोकं सारे विश्व को; सिंचते = सींचनेवाले; वेंकटेशाय=श्री वेंकटेश्वर का: मंगलम् = मंगल हो।

दयामृत-प्रवाह की तरंगों की तरह ठंढे लगनेवाले कटाक्षों से समस्त विश्व को सींचनेवाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

स्रग्भूषांबर हेतीनां सुषमावहमूर्तये।
सर्वार्ति शमनायास्तु वेंकटेशाय मंगलम् ॥ ११ ॥

स्रग्भूषांबर हेतीनां = पुष्पमालाओं, आभूषणों, पीतांबर आदि वस्त्रों, चक्र कृपाण आदि आयुधों से; सुषमावहमूर्तये अधिक शोभा संपन्न बने विग्रहवाले; सर्वार्तिशमनाय = सभी दु:खों को दूर करनेवाले; वेकटेशाय= श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल; अस्तु = हो।

फूलमाला, रत्नाभरण, पीतांबर, दिव्यायुध आदि से अधिक शोभा संपन्न बने दिव्य मंगल विग्रहवाले. सभी दुःखों को दूर करने वाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

श्री वैकुंठ विरक्ताय स्वामिपुष्करिणी तटे ।
रमया रममाणाय वेंकटेशाय मंगलम् ॥ १२ ॥

श्री वैकुंठ विरक्ताय = श्री वैकुंठ नगरी से विरक्त हुए; स्वामि पुष्करिणी तटे = स्वामि पुष्करिणी के किनारे; रमया = लक्ष्मी के साथ, रममाणाय = क्रीडा करनेवाले; वेंकटेशाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल हो।

श्री वैकुंठ से विरक्त होकर स्वामिपुष्करिणी के किनारे लक्ष्मी के साथ क्रीडा करनेवाले श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।

श्रीमत्सुंदर जामातृ मुनिमानस वासिने ।
सर्वलोक निवासाय श्रीनिवास मंगलम् ॥ १३ ॥

श्री मत्सुंदर जामातृमुनिमानसवासिने = श्री रम्य जामातृ मुनि (मनवालमहामुनि) के मन में निवास करनेवाले; सर्वलोकनिवासाय = समस्त लोकों में आवास करनेवाले; श्रीनिवासाय = श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल हो।

मंगलाशासनपरैर्मदाचार्य पुरोगमैः ।
सर्वैश्च पूर्वै राचार्यैः सत्कृतायास्तु मंगलम् ॥ १४ ॥

मंगलाशासनपरैः = मंगल पाठ के पठन में आसक्ति दिखानेवाले; मदाचार्य पुरोगमैः = मेरे गुरु के पूर्व रहे हुए; पूर्वैः = प्राचीन; आचार्यैः = आचार्य जन; सर्वैः = सभी से; सत्कृताय = 'समर्चित; श्री वेंकटेश्वर का; मंगलम् = मंगल; अस्तु हो।

मंगलपाठ करनेवाले मेरे आचार्य से पहले हुए सभी प्राचीन आचार्यों से पूजित श्री वेंकटेश्वर का मंगल हो।